



अद्वैत आश्रम की 125वीं वर्षगाँठ

चर्चा में क्यों?

उत्तराखण्ड में [रामकृष्ण मठ और मशिन का केंद्र](#), मायावती में अद्वैत आश्रम की 125वीं वर्षगाँठ मनाई गई

- इस उपलब्धिके उपलक्ष्य में हाल ही में मायावती में दो दविसीय कार्यक्रम आयोजित कयिा गया था ।

मुख्य बडुि:

- आश्रम की स्थापना [स्वामी वविकानंद](#) ने वर्ष 1899 में की थी ।
- आश्रम का उददेश्य अनुषठानकि परंपराओं से मुक्त **अद्वैत दर्शन का अध्ययन, अभ्यास और प्रचार** करना है तथा इसका प्रसार करने में दूसरों को प्रशकषिती करना भी है ।
 - थोडे ही समय में आश्रम पूरव और पश्चमि के सर्वोत्तम वचिारधाराओं का केंद्र बडुि बन गया । इसने मूल अद्वैत सदिधांत का प्रसार करने में मदद की ।
- कोलकाता में अद्वैत आश्रम की स्थापना इसके **प्रकाशनों** और पत्रकिा '**प्रबुद्ध भारत**' की बडुती मांग को पूरा करने के लयि मायावती आश्रम के 21 वर्ष बाद की गई थी ।
- **अद्वैत वेदांत** हडुि धरुम का मूल है, जो मानव जातुा के अस्ततित्व और एकजुटता की शकषिा देता है ।
 - पछिले 125 वर्षों से अद्वैत आश्रम अपनी कोलकाता शाखा से प्रकाशति साहतिय के माध्यम से अद्वैत वचिारधारा के सदिधांतों का प्रसार कर रहा है ।

अद्वैत वेदांत

- यह शुद्ध अद्वैतवाद की एक दारुशनकि स्थतिि को स्पष्ट करता है, एक पुनरीकषण वशि्वदृषुटि जो यह **प्राचीन उपनषिद ग्रंथों** से संबद्ध है ।
- अद्वैत वेदांतियों के अनुसार, उपनषिद अद्वैत के एक मौलकि सदिधांत को प्रकट करते हैं जसि 'ब्रह्म' कहा जाता है, जो सभी वसतुओं की वास्तवकिता है ।
- अद्वैतवादी **ब्रह्म को व्यक्ततित्व और अनुभवजन्य बहुलता से परे समझते हैं** । वे यह स्थापति करना चाहते हैं ककिसी **व्यक्तकिा मूल (आत्मन) ब्रह्म** है ।
- अद्वैत वेदांत का मूल ज़ोर यह है क **आत्मा शुद्धाद्वैत/ शुद्ध अनैच्छकि चेतना** है ।
- यह बनिा कसिी दवतीय, अद्वैत, अनंत अस्ततित्व वाला और संख्यात्मक रूप से ब्रह्म के समान है ।

स्वामी वविकानंद

- उनका जनुम **12 जनवरी, 1863 को नरेंद्र नाथ दत्त** के रूप में हुआ था ।
- वह एक **साधु और रामकृष्ण परमहंस के प्रमुख शषिय** थे ।
- उन्होंने **वेदांत और योग** के भारतीय दर्शन को पश्चमिी वशि्व में पेश कयिा तथा उन्हें अंतरधरुमकि जागरूकता बडुाने, 19वीं सदी के अंत में हडुि धरुम को वशि्व मंच पर लाने का श्रेय दयिा जाता है ।
- उन्होंने वर्ष **1987 में अपने गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस** के नाम पर रामकृष्ण मशिन की स्थापना की । संस्था ने भारत में व्यापक शैकषणकि और परोपकारी कार्य कयिे ।
- उन्होंने वर्ष **1893 में शकिागो (U.S.) में आयोजति प्रथम धरुम संसद** में भी भारत का प्रतनिधित्व कयिा ।

